بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 05.08.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

जलसा सालाना बर्तानियः की अनुकूलता से मेज़बानों (आतिथ्यों) तथा मेहमानों (अतिथियों) के लिए स्वर्णिम उपदेश।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज, बयान फ़र्मूदा 05 अगस्त 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया- इस साल जलसा सालाना बर्तानियः जो है, 2019 के बाद दोबारा विशाल रूप में आयोजित हो रहा है। गतवर्ष भी जलसा हुआ था किन्तु सीमित संख्या के साथ। यद्यपि इस साल भी यह जलसा सालाना केवल बर्तानियः जमाअत का है और बाहर के अतिथि अति सीमित संख्या में शामिल हो रहे हैं किन्तु तीनों दिन इन्शाअल्लाह तआला, बर्तानियः की सब जमाअतों को सम्मिलित होने की अनुमति है तथा इन्शाअल्लाह होंगी। आशा है इन्शाअल्लाह तआला अच्छी उपस्थिति हो जाएगी। जैसा कि हम जानते हैं कोविड की महामारी के कारण यथावत जलसा सालाना का क्रम तोड़ना पड़ा तथा जलसे की बरकतों से हम यथावत लाभान्वित न हो सके, एक साल तो पूर्णतः ही लाभान्वित न हो सके।

हुज़ूर पूर नूर ने समस्त सम्मिलित होने वालों को सावधानी बरतने, मास्क पहनने तथा आते जाते हुए प्रबन्धकों द्वारा दी हुई होम्योपेथिक दवाई के उपयोग की पाबन्दी का अनुरोध किया तथा कार्यकर्ताओं को उपदेश देते हुए फ़रमाया कि जलसे के संदर्भ में कार्यकर्ता, वे स्वयं-सेवक जो अपना समय हज़रत मसीह अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मेहमानों के लिए क़ुर्बान करना चाहते हों, गत सम्बोधना में मैं इस बात की ओर ध्यान नहीं दिला सका इस लिए आज इस विषय पर कुछ बातें करूंगा। यदि हम इन बातों को सम्मुख रखें तो जलसे के वास्तविक वातावरण से इन्शाअल्लाह हम लाभ पाते रहेंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलै. के फ़रमान के अनुसार यह जलसा कोई दुनिया का मेला नहीं है अपितु अल्लाह और रसूल स. की बातों को सुनने तथा उनके अनुसार अपने आपको ढालने के लिए हम यहाँ एकत्र होते, तथा हुए हैं।

फ़रमाया- जलसे का काम जलसे के तीन दिनों में नहीं हो रहा होता बल्कि कई सप्ताह पहले शुरु हो जाता है और अब तो एम.टी.ए. अपने समाचारों तथा छोटे छोटे कलिप्स के रूप में यह दिखाता है कि किस प्रकार काम हो रहा है। निःसन्देह कुछ काम बाहर की कम्पनियों तथा ठेकेदारों से करवाया जाता है

परन्तु इसके अतिरिक्त भी बहुत सा काम है जिसके लिए मानवीय शक्तियों की आवश्यकता होती है तथा यह शक्ति स्वयं-सेवक अपने समय का बलिदान देकर, अपनी सेवाएँ पेश करके उपलब्ध करते हैं। दुनिया यह चेष्टा करती है कि हमें स्वयं सेवा करने के लिए लोग न मिलें परन्तु जमाअते अहमदिया का इतिहास पूर्णतः इसके विपरीत उदाहरण पेश करता है कि इतने काम करने वाले आ जाते हैं कि व्यवस्थापकों को कठिनाई हो जाती है कि इन्हें संभालें किस तरह।

हुज़ूर ने फ़रमाया- मेहमानदारी विभाग को भविष्य के लिए यह बात नोट कर लेनी चाहिए कि जलसे से पहले अथवा बाद की स्वयं-सेवा का जो काम है, सार्वजनिक प्रेरणा के कारण उसमें आशा से अधिक आदमी आ जाते हैं, पिछले इतवार को ही इतने कार्यकर्ता हदीक़तुल महदी में जमा हो गए जिसकी व्यवस्थापकों को आशा भी न थी तथा मुझे पता लगा है कि उनके लिए खाने का भी उचित प्रबन्ध नहीं हो सका, जबकि व्यवस्थापकों को चाहिए था कि देख लेते कि इतने लोग हैं तो पहले ही प्रबन्ध करते (यह मेहमानदारी करने वालों का काम है)। यह स्वयं सेवक कोई खाने के अवसर पर तो जमा नहीं हो गए थे, स्वभवतः सुबह से काम कर रहे, अथवा यहाँ वहाँ मौजूद थे। मेरे विचार से जब पिछले जुम्अः को मैंने अन्त में जलसे के विषय में तथा जो काम करने वाले हैं उनके लिए भी दुआ के लिए कहा तो तुरन्त एक उत्साह के साथ अन्य लोगों ने भी अपनी सेवाएँ पेश कीं, परन्तु अतएव प्रबन्धकों को चाहिए कि विशेष रूप से जो सप्ताह के अन्तिम दिन हैं, इन पर विशेष व्यवस्था रखा करें। इस प्रकार मेहमानदारों का भी यह काम है कि जलसे के दिनों में सामान्यतः अधिक मात्रा में खाना तय्यार करें तथा मेहमानदारी विभाग का दायित्व है कि जो मेहमान आ रहा है उसकी पूरी तरह मेहमानदारी करें।

कार्यकर्तओं को भी मैं यह कहना चाहता हूँ कि जलसे के इन तीन दिनों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की इस भावना से सेवा करें कि उन्हें सदैव यह अनुभव दिल में रहे कि अपने अफ़सरों से अथवा किसी मेहमान की ओर से कोई बदला या प्रतिफल नहीं लेना इस सेवा का, और न मिलना है बल्कि अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए इन मेहमानों की सेवा करनी है तथा उन सहाबी तथा उनकी पतनी के सुन्दर आचरण को सामने रखना है जिसने बच्चों को भी भूखा सुला दिया था, स्वयं भी भूखे रहे तथा अतिथि के आतिथ्य का हक़ अदा कर दिया, मेहमान पर यही ज़ाहिर किया रोशनी बुझा कर कि जिस तरह वे भी उसके साथ खाना खा रहे हैं, और फिर ख़ुदा तआला ने उनके इस कर्म को इतना सराहा कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी इसकी सूचना दी और अगले दिन आप स. ने उस सहाबी से फ़रमाया कि तुम्हारी रात की युक्ति से अल्लाह तआला भी हंसा। अल्लाह तआला इस बात पर बड़ा प्रसन्न हुआ और हंसा और क़ुर्आन करीम में भी ऐसी क़ुर्बानी करने वालों का वर्णन किया है। ये क़ुर्बानी करने वाले हैं जो स्वार्थहीन होकर बलिदान देते हैं और यही लोग हैं जो सफलता प्राप्त करने वाले हैं।

अतः ये थे सहाबियों के मेहमान नवाज़ी के तरीक़े, अतिथियों की सेवा करने के। कितने भाग्य शाली हैं वे लोग जो अल्लाह तआला के लिए मेहमानों की सेवा करने का हक़ अदा करने का प्रयास

करते हैं तथा फिर मेहमान भी वे जो इस ज़माने के इमाम के बुलाने पर आए हैं, जो अल्लाह तथा उसके रसूल स. की बातें सुनने के लिए आए हैं, जो अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति की अभिलाषा लेकर आए हैं। अतः बड़े भाग्य शाली हैं वे स्वयं सेवक जो दीन के लिए आने वाले मेहमानों की सेवा अल्लाह तआला को ख़ुश करने के लिए कर रहे हैं।

पुरुष कार्यकर्ता तथा महिला कार्यकर्ताओं के कामों के विषय में हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- जब बड़ी संख्या में विभिन्न स्वभाव के लोग हों तो कुछ अधिक गरम स्वभाव के लोग भी होते हैं तथा कई बार कठोरता के साथ कार्यकर्ता से सम्बोधन अथवा किसी वस्तु की मांग करते हैं, परन्तु कारकुन का काम है कि किसी के साथ कठोरता नहीं दिखानी, किसी कर्कश बोलने वाले का जवाब कठोरता से नहीं बल्कि मुस्कुराते हुए देना है। यदि उसकी आवश्यकता पूरी कर सकते हों तो करें अन्यथा नर्मी तथा प्यार से क्षमा मांग लें अथवा अपने से ऊपर वाले अफ़सर के पास ले जाएँ जो मेहमान की समस्या का समाधान कर दे। कई बार यह काम कड़ा कठिन हो जाता है किन्तु ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए यह काम करना चाहिए, अपनी भावनाओं तथा ज़बान को क़ाबू में रखना चाहिए, इसी तरह आपस में भी कार्यकर्ता अपनी भाषा कोमल रखें।

अफ़सर तथा निगरान भी अपने सहयोगियों के साथ विनम्र भाषा में बात चीत करें, यदि किसी से कोई ग़लती हो जाए तो प्यार से समझाएँ। अफ़सरों को भी आभास होना चाहिए कि ये स्वयं सेवक अल्लाह तआला की प्रसन्नता पाने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा करने आए हैं तथा बावजूद इसके कि किसी विशेष विभाग के लिए प्रशिक्षित नहीं, सेवा की भावना से निःस्वार्थ सेवा कर रहे हैं तो उनका उत्साह बढ़ाना चाहिए। अल्लाह तआला आपस में भी सबको मिल जुल कर काम करने का सामर्थ्य दे तथा यह भावना उस समय पैदा होगी जब अफ़सरों तथा सहयोगियों को भी इस बात का आभास होगा कि हमने यह सेवा क़ुर्बानी की भावना से करनी है। विभिन्न विभागों के जो अफ़सर नियुक्त किए गए हैं वे भी सदैव याद रखें कि अल्लाह तआला की कृपा से उन्हें सेवा का सुअवसर मिल रहा है, वे अफ़सर नहीं बल्कि सेवक बन कर अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करें, अपने उच्चतम आचरण के नमूने क़ायम करें तो आधीन कारकुन तथा सहयोगी भी उच्चतम आचरण अभिव्यक्त करेंगे, अल्लाह तआला सबको इसकी भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मेहमानों से सुन्दर व्यवहार करने के बारे में अनेक अवसरों पर उपदेश दिए हैं, एक अवसर पर फ़रमाया- देखो, बहुत से मेहमान आए हुए हैं, उनमें से कुछ को तुम पहचानते हो तथा कुछ को नहीं पहचानते, इस लिए उचित होगा कि सबको आदरणीय जान कर उनकी सेवा करो। अतः यह नियम सदैव कारकुन को और विशेषतः उन कारकुनों को जिनका सीधे जनता से सम्पर्क होता है, सामने रखना चाहिए, विशेष रूप से मेहमानदारी का विभाग तथा भोज इत्यादि, इस पर बड़े अनुशासन के साथ काम करें।

अतिथियों को खाने के बारे में साधारण उपदेश के बाद इरशाद फ़रमाया- सुन्दर आचरण की अभिव्यक्ति केवल कार्यकर्ताओं का ही काम नहीं बल्कि हर एक शामिल होने वाले का काम है। हज़रत मसीह मौऊद अलहिस्सलाम ने जलसे में शामिल होने वालों से भी फ़रमाया है कि अच्छे आचरण दिखाओ तथा एक दूसरे का ध्यान रखो। सदैव प्रत्येक शामिल होने वाला इस बात को सम्मुख रखे कि उसने इस जलसे में शामिल होना अपनी दीनी, रूहानी प्यास बुझाने के लिए किया है तथा इसको प्राप्त करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलै. की इस बात को सदा सम्मुख रखना चाहिए कि यह जलसा शुद्ध लिल्लाही जलसा है इस लिए कभी भी छोटी छोटी बातों पर किसी प्रकार की व्याकुलता तथा भेदभाव को प्रकट नहीं करना चाहिए, कार्यकर्ता भी इंसान हैं, यदि उनसे कोई अति हो जाती है तो अनदेखा कर देना चाहिए। अतः इन दिनों में यह बात भी याद रखें।

एक अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- यह दुआ किया करो, ऐ अल्लाह! हम तुझसे इस यात्रा में भलाई तथा तक़्वा चाहते हैं, तू हमें ऐसे नेक कर्म का सामर्थ्य दे जो तुझे पसन्द हों। जब हम इस तरह दुआ कर रहे होंगे तो अल्लाह तआला हमारे यहाँ के विश्राम तथा यात्रा को भी बरकतो से भर देगा। अतः इन दिनों को दुआओं तथा अल्लाह की स्तुति से भरने का प्रयास करें। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तो हमें हर एक अवसर के लिए दुआ सिखाई है, कुछ लोग अपने घरों को छोड़ कर जसले की बरकतों से लाभ लेने के लिए आए हैं, उन्हें अपने पीछे घर वालों की चिंता भी होगी तो आप स. ने फ़रमाया कि यह दुआ किया करो- ऐ हमारे ख़ुदा! मैं शरण चाहता हूँ यात्रा की कठिनाईयों, अरूचिकर तथा व्याकुल करने वाले दृश्यों, माल तथा परिवार में बुरे परिणाम तथा अरूचि पूर्ण बदलाव से, यह बड़ी जामे (सघन) दुआ है, यात्रा में अपने आपको भी हर तरह से सुरक्षित रखने तथा घर वालों के अल्लाह तआला की शरण में रहने की दुआ है। ऐसी सोच तथा ऐसी दुआओं से ज़बान को तर करते हुए जब यहाँ स्त्री एवं पुरुष फिर रहे होंगे तो फिर जहाँ वातावरण शांति पूर्ण होगा, दिलों की संतुष्टि के सामान हो रहे होंगे, वहां अल्लाह तआला हर एक बुरे दृश्य से भी बचाए रखेगा। आजकल कोविड के कारण चिंता भी है इस लिए दुआओं की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। सामान्य दुआओं के साथ इन दिनों में दरूद भी विशष रूप से पढ़ें। अल्लाह तआला जलसे में शामिल होने वाल हर एक स्त्री पुरुष को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआ का उत्तराधिकारी बनाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131